काश ! गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती ! तो---

हिन्दू-मुस्लिम भाई का नारा नहीं लगाते, पाकिस्तान न बनता

नाथूराम गोडसे को उनकी हत्या नहीं करनी पड़ती। क्योंकि कुरान का अल्लाह केवल मुसलमानों का ही अल्लाह है और वह कुरान के अनुसार सातवें आसमान पर रहता है। गांधीजी का ईश्वर समस्त सृष्टि का रचियता और पालनहार है व सर्व व्यापक है।

कुरान कहती है कि जो कुरान और अल्लाह पर ईमान नहीं लाते अर्थात् जो गैर-मुस्लिम हैं वे सभी काफिर हैं और उन्हें मार दो। या सबको मुसलमान बना डालो। काफिरों के लिए उसका आदेश है कि इन्हें मारो, काटो, इनकी गर्दनें काटो, इनके हाथ पांव विपरीत दिशाओं में काटकर फेंक दो।

इसी कारण हिन्दुओं के अतिरिक्त यदि अन्य गैर-मुस्लिम जगत यह समझता है कि मुसलमान केवल हिन्दू का ही शत्रु है तो यह उसकी भूल है, क्योंकि कुरान के आदेश के अनुसार उसके लिए गैर-मुस्लिम, ईसाई, यहूदी आदि सभी काफिर हैं और सभी के लिए एक ही सजा है। इसी का परिणाम है कि सीरिया, फिलीपीन्स तथा लेबनान में ईसाईयों और मुसलमानों में काफी मार-काट हुई है क्योंकि मुसलमान जहां मुकाबला करने की स्थिति में होता है, वहां वह कुरान के आदेश का पालन करने के लिए मार-काट करता ही है।

प्रथम संस्करण : 1000
द्वितीय संस्करण : 4000
तृतीय संस्करण : 4000
चतुर्थ संस्करण : 5000
पंचम संस्करण : 5000
षष्ठ संस्करण : 10000
सप्तम संसकरण : 10000
अष्टम संस्करण : 10000
नवम संस्करण : 10000
दिसम्बर 1995
जुलाई, 1997 : 11000

बिशनस्वरूप गोयल

1 पुस्तक मूल्य : 5-00
प्रचारार्थ 100 पुस्तकों का मूल्य : 350/-
राशि अग्रिम भेजने पर
डाक खर्च की छूट
दूरभाष : 5723231

विशेष

इस पुस्तकों का अध्ययन आप स्वयं तो करें ही किन्तु इस्लाम मज़हब क्या है इसकी जानकारी दूसरों को भी हो इसलिए आप इन पुस्तकों को छपवाकर स्वयं भी इसका प्रचार करें।

हमारे संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के वितरक

1. विश्व हिन्दू परिषद
   दिल्ली
2. भारतीय साहित्य सदन
   30/90,
   कनॉट सरकस,
   नई दिल्ली-110001
3. सूर्य प्रकाशन
   नई सड़क,
   दिल्ली-110006
4. सुरूचि प्रकाशन
   झंडेवालां,
   नाज सिनेमा के सामने
   नई दिल्ली-110005
7. श्री विवेक गोविन्द सुरंग
   एल आई जी-26, शंकर नगर,
   सैक्टर-1, रायपुर
   मध्य प्रदेश (पिन-492001)
8. प्रधान, आर्य समाज धार,
   धार, मध्य प्रदेश (पिन-454001)
9. श्री मनीषा खन्ना
   एस0 एम0 ट्रेडर्स, रमेश बाजार
   बम्बई-400002
10. साहित्य भारती
    भारती भवन
    58-राजेन्द्र नगर, लखनऊ
    उत्तर प्रदेश (पिन-226004)

सभी पुस्तकें एक साथ मंगाने पर २५ प्रतिशत की छूट डाक व्यय कार्यालय का होगा राशि अग्रिम भेजनी होगी।
एक या दो पुस्तक मंगाने के लिये डाक टिकट भेज सकते हैं।
हमारी सभी पुस्तकों पर छपवाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

काश ! गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती ! तो....

हमारे देश की जनता एवं सरकार द्वारा माने जाने वाले प्रमुख नेता, स्वतन्त्रता प्राप्ति नाटक तथा देश का विभाजन करने वाले प्रमुख हीरो श्री मोहनदास कर्मचन्द (महात्मा गांधी) जिनकी मुस्लिम तुष्टिकरण तथा मुस्लिमपरस्त नीतियों के परिणामस्वरूप हिन्दुस्थान का विभाजन हुआ । यदि उन्हें मुस्लिम मजहब की नीतियों और इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरान द्वारा निर्धारित मुस्लिम मूल सिद्धान्तों का बोध होता तो सम्भवत: हिन्दुस्थान को 15 अगस्त 1947 का वह काला और दुर्भाग्यपूर्ण दिन देखने को न मिलता, जब हमारी मातृभूमि को काटकर मुसलमानों के होमलैण्ड रूपी पाकिस्तान बनाने के लिए हिन्दुस्थान का भू-भाग मुसलमानों को तोहफे के रूप में दिया गया था ।

हिन्दुस्थान के कर्णधार, जो उस समय सत्ता के भूखे थे और उसे प्राप्त करने के लिए लालायित थे, उन्होंने इस विभाजन को स्वीकार तो कर लिया, किन्तु इसको विभाजन का नाम न देकर इसे स्वतन्त्राता प्राप्ति की संज्ञा दी । इसका सरकारी प्रचार-माध्यमों द्वारा जोर-शोर से प्रचार भी किया गया । इस प्रचार के प्रभाव में आकर हिन्दुस्थान देश की साधारण जनता भी जो उस समय हिन्दुस्थान से अंग्रेजों को निकालने के लिए उतावली थी उसने भी इसे विभाजन न मानकर स्वतन्त्रता प्राप्ति के रूप में ही स्वीकार कर लिया और तभी से आज तक हर वर्ष यह स्वतन्त्रता दिवस के नाम से राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है ।

पाकिस्तान में भी स्वतन्त्रता दिवस मनाया जाता है । पाकिस्तान द्वारा तो अपना योम-ए-आजादि के रूप में मनाए जाने का औचित्य भी है क्योंकि इस दिन हिन्दुस्थान में रहने वाले लगभग 22 प्रतिशत मुसलमानों को, जो इस देश को न अपना देश मानते थे और न ही उनकी इसके प्रति आस्था और वफादारी थी। जो अरब और अन्य मुस्लिम देशों को आस्था के रूप में स्वीकार करते थे, हिन्दुस्थान की भूमि का 30 प्रतिशत भाग काटकर तोहफे के रूप में उनका अलग होमलैण्ड बनाने के लिए दे दिया गया था जबकि वे इसके अधिकारी भी नहीं थे किन्तु फिर भी उन्हें इसे प्राप्त करने में सफलता मिल ही गई ।

मुसलमानों की इस सफलता के पीछे ब्रिटिश शासकों की यह चाल थी कि हिन्दुस्थान छोड़ने से पहले वे हिन्दुस्थान की भूमि का एक भाग काटकर यहां अपना पिटठू एक मुस्लिम राज्य स्थापित करना चाहते थे । इसी कारण उन्होंने महात्मा गांधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा अन्य प्रमुख नेताओं को स्वतन्त्रता का सब्जबाग दिखाकर अपनी चाल में सफलता प्राप्त करने के लिए देश का विभाजन कर

मुसलमानों को उनका भाग दिलाने के लिए सहमत कर लिया और हिन्दुस्थान दो टुकडों, एक हिन्दू हिन्दुस्थान और दूसरा मुस्लिम हिन्दुस्थान, जो अब पाकिस्तान और बंगला देश के नाम से विद्यमान है, में बांट दिया गया और हिन्दुस्थान का वास्तविक स्वरूप ही बदल दिया ।

ब्रिटिश शासकों ने 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम को दबाने के बाद यह भली-भाँति जान लिया था कि इस देश की स्वतन्त्रता के लिए यहां का हिन्दू समाज ही एकमात्र संर्घसरत है । इसी कारण उन्होंने हिन्दू समाज को तोड़ने और देश को कमजोर करने के लिए दूरगामी योजना बनाई । इस योजना के अर्न्तगत उन्होंने हिन्दुस्थान में रहने वाले मुसलमानों की पीठ ठोंकी और उन्हें अपने होमलैण्ड के लिए भूमि का भाग प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन दिया और उसमें अपना पूर्ण सहयोग तथा समर्थन दिया । इसे प्राप्त करने के लिए मुसलमानों ने एक विशुद्ध मुस्लिम दल 'मुस्लिम लीग' के नाम से गठित किया और अंग्रेज शासकों ने उसे तुरन्त मान्यता प्रदान कर दी । इसके बाद उन्होंने हिन्दुस्थान का नाम बदलकर 'इण्डिया-सो-काल्ड' भारत का नाम दिया । इसकी हिन्दू पहचान ही समाप्त हो जाए क्योंकि हिन्दुस्थान शब्द से हिन्दू का बोध था । इसी कारण हिन्दुस्थान अपनी पहचान को खो बैठा।

अंग्रेज तो यह जानते ही थे कि मुसलमान् स्वभाव से ही हिन्दू तथा हिन्दुस्थान-विरोधी हैं, इसलिए उन्हें इस देश का विभाजन कराने के लिए अपना पूर्ण सहयोग और समर्थन दिया ताकि मुसलमान अपना होमलैण्ड बनाने कि लिए अपने भाग की मांग करने लगे, और ऐसा ही हुआ । उस समय के नेता श्री जिन्ना ने मुसलमानों को अपने होमलैण्ड के लिए हिन्दुस्थान की भूमि में से हिस्सा लेने की मांग आरम्भ कर दी । इसमें अंग्रेजों ने अपना खुलकर समर्थन ही नहीं दिया अपितु गांधी जी जैसे नेताओं को अपनी चाल में फंसाकर इस देश का विभाजन कराने में सफलता प्राप्त कर ली और 15 अगस्त 1947 को इस देश का विभाजन हो गया । अंग्रेजों को, हिन्दुस्थान का विभाजन करने में जो सफलता मिली, इसका प्रमुख कारण उस समय अंग्रेजों की यह चाल भी थी कि उन्होंने मुस्लिम लीग और जिन्ना के मुकाबले में दूसरे पक्ष के रूप में जिन नेताओं को मान्यता दी उनमें कुछ तो मुसलमान ही थे व गांधी जैसे हिन्दू थे उन्हें मुस्लिम इतिहास और इस्लाम मजहब की पवित्र पुस्तक कुरान द्वारा निर्धारित मजहबी, साम्प्रदायिक सिद्धान्तों की जानकारी नहीं थी, और न ही इन्हें मुस्लिम इतिहास का बोध था । कुरान के अनुसार जो कुरान का अल्लाह है उस पर जो ईमान लाता है अर्थात मुसलमान है या बन जाता है वही अल्लाह का बन्दा और सच्चा इंसान है । जो अल्लाह पर ईमान नही लाता अर्थात मुसलमान नहीं है या नहीं बनता और उसके द्वारा भेजे गए फरिश्तों, रसूलों तथा

पैगम्बरों का विरोध करता है, वह काफिर है । इसका मतलब सारे गैर मुस्लिम काफिर हैं और कुरान के अल्लाह की ओर से इन काफिरों पर प्रकोप-पर-प्रकोप और कठोर अपमानजनक यातनाएं नियत हैं । दूसरी ओर कुरान में स्थान-स्थान पर कहा गया है कि सारी दुनिया को अल्लाह ने ही बनाया है और वही सबका पालनकर्ता भी है । **किन्तु यह सोचने की बात है कि जब कुरान के अल्लाह ने सारी दुनिया बनाई है और सबका पालनकर्ता है तो काफिर बनाये ही क्यों** और फिर इन काफिरों पर प्रकोप-पर-प्रकोप और कठोर अपमानजनक यातनाएं देने का आदेश क्यों दिया गया ? जो सबका पालन कर्ता है तो फिर काफिरों को, जो उसने ही बनाए हैं उनको पालने की बजाये मारने की बात कैसे करता है, उसे तो अपने द्वारा बनाए गए सभी का पालन करना है ।

अब नीचे कुरान की कुछ आयतों को कुरान की अरबी भाषा में ही देवनागरी लिपि में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा हूं ताकि पाठकगण कुरान के सिद्धान्तों और उसके अल्लाह के आदेशों के बारे में जानकारी की एक झलक प्राप्त कर सकें क्योंकि अरबी भाषा के कुछ अक्षर ऐसे हैं जिन्हें देवनागरी लिपि में लिख पाना सम्भव नहीं, इसलिए यदि कहीं गलती हो जाए तो पाठकगण उसे क्षमा करने की कृपा करेंगे ऐसा मुझे विश्वास है । जिस कुरान से ये आयतें उद्धत की जा रही हैं. उसके संक्षिप्त टीकाकार सैयद अबुल आला मौदूदी हैं और उसके अनुवादक श्री मुहम्मद फारुख खां हैं । यह मर्कजी मकतबा इस्लामी, १३५३, बाजार चितली कब्र, दिल्ली-६ से प्रकाशित की गई है ।

1- सूरा-2 अलबकेरा-पारा-1 की आयत संख्या 90 :

"बइस्मा आशतर वाबैअन अन यकुफता बमा अन्नजल अल्लाहबगीयन अन यूनन्जल अल्लाह मिन फजलेअला मिन यशिया मिन इबादा फबा व बगजब विलकुफ्री न आजब मुहीना'' इसका अर्थ है, उसके अर्थात रसूल के आने से पहलेक वे स्वयं काफिरों के मुकाबले में विजय की प्रार्थनाएं किया करते थे परन्तु जब चीज आ गई, जिसे वह पहचान भी गए तो उन्होंने उसे मानने से इनकार कर दिया ।'' अल्लाह की फटकार इनकार करने वालों पर कैसा बुरा साधन है जिससे ये अपने दिल को तसल्ली हासिल करते हैं कि जो आदेश अल्लाह ने भेजा है उसे स्वीकार करने सें केवल इस दुराग्रह के कारण इनकार करते हैं कि जो अल्लाह ने उदार दान प्रकाशना और पैगम्बरी से अपने जिस बन्दे को स्वयं चाहा, अनुग्रहीत किया । अतः अब ये प्रकोप-पर-प्रकोप के अधिकारी हो गए हैं और ऐसे इनकार करने वालों के लिए घोर अपमानजनक यातनाएं नियत हैं ।

अब इस आयत से अनुमान लगाया जा सकता है कि जो रसूल को नहीं मानता

और उस पर ईमान लाकर मुसलमान नहीं बनता, वह अल्लाह इस का शत्रु है, उस पर अल्लाह की फटकार है और अल्लाह उसे अपमानजनक यातनाएं देगा । कुरान में जब यह लिखा गया है कि सारी दुनिया की रचना अल्लाह ने ही की है तो जैसाकि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, उसने काफिर क्यों बनाए, और जब कुरान का अल्लाह सबका पालनकर्ता है तो फिर वह अपने द्वारा ही बनाए गए काफिरों को दण्ड देने की व्यवस्था कैसे कर सकता है?

2. सूरा-2 अलबकरा-पारा-1 की आयत संख्या 97. 98 . 99 :

कुल मिन गान उदूबअल जिबरील फानया नजला अली कलबिलाह बाजन अल्लाह मुस्दद्कान लिम्बाबीन यदयद वहूदी व बशरी ललमोमनीन मिन गान उदूवाल्लाह वमलबकता वरसूल्लाह व जिबरील व मीकाईल फान अल्लाह अदूवल कुफीन । वलकद अनजलना ऐयक बैयन्त वमायकूफ भा इल्ला अल फि कून ।

इस आयत का अर्थ है, "इनसे कहो अर्थात गैर-मुस्लिमों से कि जो कोई जिबरील से बैर रखता है उसे मालूम होना चाहिए कि जिबरील ने अल्लाह की आज्ञा से ही यह कुरान तुम्हारे पर उतारा है, जो पहली आयी हुई किताबों की पुष्टि और समर्थन करती है और ईमान लाने वालों अर्थात मुसलमानों का मार्ग-दर्शन और सफलता की शुभ सूचना बनकर आई है । अगर जिबरील से इनके वैर का कारण यही है तो इनसे कह दो, जोके अल्लाह के फरिश्तों, उसके रसूलों, जिबरील तथा मीकाईल के शत्रु हैं, अल्लाह उन काफिरों अर्थात गैर-मुस्लिमों का शत्रु है ।

इस आयत से पाठकगण समझ सकते हैं कि जो कुरान और उसके अल्लाह पर ईमान नहीं लाते अर्थात मुसलमान नहीं बनते, अल्लाह उनका दुश्मन है । जो उसके फरिश्तों, जिबरील, मीकाईल से बैर रखता है वह काफिर है और कुरान का अल्लाह भी उनका बैरी है । जब कुरान में जगह-जगह पर यह उल्लेख किया गया है कि अल्लाह ने ही सारी दुनिया बनाई है और वह ही सबका पालनकर्ता है तो समस्त जगत को बनाने वाला और पालनकर्ता किसी का शत्रु कैसे हो सकता है । इससे यह स्पेष्ट है कि कुरान अल्लाह की रचना न होकर किसी मानव द्वारा ही लिखी गई है या फिर जिसे अल्लाह का उल्लेख किया गया है, वह स्वयं मानव है । चाहे कुरान का रचयिता हो, कुरान का अल्लाह, मुसलमान ही होगा । तभी ऐसी बातों का कुरान में उल्लेख मिलता है ।

3. सूरा-2 अलबकरा-पारा-1 की आयत संख्या 130-131-132-133 :

"यमनययर गब अनमिल्लत इब्राहीम इलामिन सफला नफसला वलकदे इस्तफीना फीउददुनिया वइन्द फि अलअख्रताहलिमन अलअसलहीन: आयत १३० ।

इजाकअल अल्लाह रब्बे असलम लिरब्बअलअलमीन, आयत 131 । ववस्सी बिहा इब्राहीम न नबीयाव याकूब नबीइन अल्लाह अस्तफी लुकमरउददीन फलातुमूतुन इल्ला व अन्तहा मुसलमून, आयत 132। अमरकुन्तामर शुहदा इज खिजर याकूब अलमौतूल्ला इज काल अल नबीया । माताअबदून मिन बाअदी कालू अनअबद इलहल्ला व अल्लाह अबावक इब्राहीम वह इस्माइल व इसहाक इल्लाहन वाहदन वनहननला मुसलमून । 133

इन आयतों का अर्थ है, "अब कौन है, जो इब्राहीम के तरीकों से नफरत करता है जिसने स्वयं अपने आपको मूर्खता में ग्रस्त कर लिया है । उसके सिवा यह कर्म कौन कर सकता है । इब्राहीम तो वह व्यक्ति है, जिसको हमने अर्थात कुरान के अल्लाह ने संसार में अपने कामों के लिए चुना है और परलोक में उसकी गण्ना अच्छे लोगों में होगी । उसका हाल यह था कि जब उसके प्रभू अल्लाह ने उससे कहा कि मुस्लिम हो जा, तो उसने तुरन्त कहा, "मैं जगत के स्वामी का मुस्लिम हो गया ।" इसी तरीके पर चलने की ताकीद उसने अपनी औलाद को दी थी और इसी की वसीयत याकूब ने अपनी सन्तान को की थी । उसने कहा था, 'मेरे बच्चों, अल्लाह ने तुम्हारे लिए यह मजहब अर्थात मुस्लिम मजहब पसन्द किया है। अत: मरते समय तक मुस्लिम ही रहना" । फिर क्या तुम उस समय मौजूद थे, जब याकूब इस संसार से विदा हो रहा था, उसने मरते समय अपने बेटों से पूछा, "बच्चों मेरे पीछे तुम किसकी बन्दगी करोगे ।" उन सबने उत्तर दिया कि हम उसी एक ईश्वर अर्थात कुरान के अल्लाह की बन्दगी करेंगे, जिसे आपने और आपके पूर्वजों इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक ने ईश्वर अर्थात कुरान का अल्लाह माना है और हम उसी के मुस्लिम हैं ।"

पाठकगण इन आयतों पर पूरी तरह गम्भीरता से विचार करें कि कुरान का अल्लाह कुरान के माध्यम से किस प्रकार मुसलमान मजहब स्वीकार करने के लिए खुले रूप में वकालत करता है । इससे यह भी स्पष्ट होता है कि कुरान का अल्लाह तो केवल इस्लाम का ही अल्लाह है और कुरान की यह बात इसलिये करने योग्य नहीं कि अल्लाह ने ही सारी दुनिया बनायी है और वही सबका पालनकर्ता है । क्योंकि कुरान का अल्लाह जो सब कुछ करता है, वह मात्र मुसलमानों के लिए ही करता है, शेष सबका तो वह विरोधी है । ऐसी स्थिति में वह संसार का रचियता कैसे हो सकता है । **अत: यह प्रमाणित होता है कि कुरान अल्लाह द्वारा रचित पुस्तक न होकर किसी मुसलमान द्वारा ही लिखी गई है** । ऐसा लगता है कि जब हजरत मुहम्मद का मुस्लिम मजहब मदीने के लोगों ने स्वीकार किया होगा, उस समय उनके लिए कुछ नियम बनाये गये होंगे और उन्हें ही अरबी भाषा में लिपिबद्ध कर उसे कुरान का नाम दे दिया गया होगा। इसी कारण यह केवल

मुसलमानों का ही ग्रन्थ है । इसलिए कुरान किसी आदमी की रचना है न कि अल्लाह की। अब नीचे आयतों का हिन्दी अनुवाद ही दिया जा रहा है ।

4- सुरा 2 अलबकरा-पारा-1 की आयत संख्या 134-135-136:

यहूदी कहते हैं, "यहूदी हो जा सीधा मार्ग पाओगे ।'' ईसाई कहते हैं कि ईसाई हो तो मार्ग मिलेगा । उनसे कहो, अपितु सबको छोडकर इब्राहीम का पंथ अर्थात मुस्लिम मजहब अपनाओ, क्योंकि इब्राहीम मुश्रिक अर्थात बहुदेववादी अर्थात बहुत से देवों को माने वाला नही था । इनसे कह दो कि हम ईमान लाये अल्लाह पर और उस मार्ग पर जो हमारी ओर उतरा है और जो इब्राहीम, इस्माईल इसहाक और याकूब की सन्तान की ओर उतरा है और मूसा तथा ईसा एवं दूसरे सभी पैगम्बरों को उसके अल्लाह की ओर से दिया गया है । हम उनके बीच कोई अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के मुस्लिम हैं ।

क्या कोई भी साधारण विवेक वाला व्यक्ति कुरान की इस बात से सहमत हो सकेगा कि अल्लाह, जिसने सारी दुनिया बनाई है और सबका पालनकर्ता है जैसा कि कुरान में जगह-जगह पर उल्लेख किया गया है, उसने केवल सारी दुनिया में मुस्लिम मजहब ही बनाया है और फिर यदि यह मान भी लिया जाये कि अल्लाह ने अपने द्वारा बनाई गयी सारी दुनिया मुसलमान ही बनायी तो फिर ये काफिर या गैर-मुस्लिम कहा से आ गये । जिनका कुरान में उल्लेख किया गया है । इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि ये सभी बातें कपोल कल्पित हैं क्योंकि अल्लाह या ईश्वर ने तो केवल मानव या इन्सान पैदा किया उसने कोई मजहब, जाति या सम्प्रदाय नहीं बनाया । मानव को तो विभिन्न मजहबों, जातियों तथा सम्प्रदायों में मानव ही ने बांटा है न कि ईश्वर ने । किन्तु कुरान के अल्लाह ने तो केवल मानव पैदा न करके मुसलमान मजहब ही पैदा किया है । इस कारण यह स्पष्ट हो जाता है कि कुरान अल्लाह की रचना न होकर मानवकृत ही है और वह इसका रचयिता मानव कोई मुसलमान ही होगा।

5. सूरा 2 अलबकरा-पारा-1 की आयत संख्या 187 :

"तुम्हारे लिए रोजे के दिनों में रातों को अपनी औरतों के पास जाना वैध कर दिया गया है, वे तुम्हारे परिधान हैं और तुम उनके लिए । अल्लाह को ज्ञात हो गया कि तुम लोग चुपके-चुपके अपने आप से चोरी कर रहे थे, मगर उसने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया है और तुम्हें छोड़ दिया है । अब तुम अपनी औरत के साथ रात काटो और जो आनन्द तुम्हारे लिए अल्लाह ने वैध कर दिया है उसे प्राप्त करो । रातों को खाओ-पीओ भी यहां तक कि रात-कालिमा की धारी से प्रातः बेला की श्वेत धारी स्पष्ट दिखाई दे जाए ।''

पाठकगण समझ सकते हैं कि क्या ईश्वर या अल्लाह जो समस्त सृष्टि का रचयिता है वह इस प्रकार के बेहूदे और अनुचित आदेश कर सकता है या कानून बना सकता है । उसे इस प्रकार की बेहूदी बातों से क्या मतलब हो सकता है । ये सब कार्य तो मानव के अपने अधिकार की बातें है कि कौन कार्य किस समय करना है अथवा नहीं । क्योंकि ईश्वर ने अच्छे काम और बुरे काम की पहचान के लिए मानव को बुद्धि प्रदान कर दी है और वह अपने बारे में सोचने में स्वतन्त्र है । इस आयत को पढ़ने से तो ऐसा लगता है कि कुरान का रचयिता कोई बहुत ही ऐयाश (कामी) तबीयत का व्यक्ति रहा होगा जो अपने आपको रोजे जैसे पवित्र दिनों में भी अय्यासी करने से नहीं रोक सका होगा इसलिए उसने इस कार्य को रोजे जैसे पवित्र दिनों में भी वैध करार देकर कुरान के माध्यम से लोगों तक पहुंचा दिया ताकि और लोग भी ऐसा ही करें । अन्यथा ईश्वर या अल्लाह ऐसा आदेश कभी नहीं दे सकता ।

6. सूरा 2 अलबकरा-पारा-1 की आयत संख्या 190-191-192:

" और तुम अल्लाह के मार्ग में उनसे लड़ो जो तुमसे लड़ते हैं । जहां भी तुम्हारी उनसे मुठभेड़ हो जाए उनसे लड़ो, उन्हें निकालो जहां से तुम्हें निकाला है । अगर वे तुमसे मस्जिद के पास भी लड़ें तुम उन्हें निःसंकोच मारो । ऐसे अधर्मियों की यही सजा है । तुम उनसे लड़ते रहो यहां तक कि वे शेष न रहें या वे अल्लाह की आज्ञा पालन करें अर्थात वे जब तक मुसलमान बनने के लिए राजी न हो जायें ।''

यहां यह समझने की बात है कि अल्लाह सभी गैर-मुस्लिम मानव जाति को कुरान के माध्यम से मारने का आदेश भी देता है । वैसे कुरान के प्रत्येक सूरा के आरम्भ में लिखा गया है,'' बिस्मिल्लाह उलरहमान उलरहीम'' जिसका अर्थ है "अल्लाह के नाम से जो करूणामय और दयावान है ।'' एक ओर कुरान का अल्लाह कुरान के अनुसार करूणामय और दयावान है दूसरी ओर कुरान के अनुसार ही कुरान का अल्लाह सभी गैर-मुस्लिम जगत को मारने का आदेश देते हुए कहता है कि उन्हें तब तक मारो जब तक वे समाप्त न हो जायें या अल्लाह और कुरान पर ईमान न ले आयें अर्थात मुसलमान न बन जायें । इससे इस बात की पुष्टि होती है कि कुरान किसी मुसलमान व्यक्ति की ही रचना है, अल्लाह की नहीं ।

7. सूरा 3 आले इमरान-पारा 3 की आयत संख्या 82 :

"अब क्या यह लोग अल्लाह की आज्ञा पालन की प्रणाली छोडकर अर्थात मुस्लिम प्रणाली को छोड़कर और अन्य प्रणाली को चाहते हैं जबकि धरती की सारी चीजें

आकाश और धरती भी अल्लाह की ही आज्ञाकारी अर्थात मुस्लिम है ।''

8. सूरा 5 अलमाइद-पारा-6 की आयत संख्या 32 :

"जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और धरती में बिगाड़ करते फिरते हैं यहां धरती का अभिप्राय उस देश से है जहां का सारा प्रबन्ध करने की व्यवस्था इस्लामी हुकूमत पर है, अल्लाह और रसूल के युद्ध करने का अभिप्राय उस स्वस्थ प्रणाली अर्थात मुस्लिम प्रणाली के विरूद्ध करना है, जो इस्लामी हुकूमत ने वहां स्थापित कर रखी है उनको दण्ड है कि उनका वध किया जाये या सूली पर चढ़ा दिया जाये या उनके हाथ-पांव विपरीत दिशाओं से काट डाले जाएं ।

9. सूरा 5 अलमाइदा-पारा-6 की आयत संख्या 44 :

"हमने तौरात उतारी जिसमें राह की खबर और प्रकाश था । सारे नबी, जो मुस्लिम थे, उसी के अनुसार यहूदी बन जाने वालों का फैसला करते थे ।''

10. सूरा अलमाइदा-पारा-6 की आयत संख्या 51 :

" हे लोगों, जो ईमान लाये हो अर्थात मुसलमान बन गये हो, यहूदियों, ईसाइयों और बहुदेव वादियों को अपना साथी और मित्र न बनाओ । ये आपस में एक-दूसरे के मित्र हैं अगर तुममें से कोई इनको अपना मित्र बनाता है तो उसकी गिनती भी इन्हीं काफिरों में होगी ।''

11. सूरा 8 अल अनफाल-पारा-9 की आयत संख्या 38-39 :

'हे लोगों, जो ईमान लाये हो अर्थात मुसलमान बन गये हो, इन काफिरों से अर्थात जो गैर-मुस्लिम हैं, युद्ध करो । यहां तक कि फित्ना बाकी न रहे और मजहब पूरा का पूरा अल्लाह का हो जाए । अर्थात कोई गैर-मुस्लिम न रहे और सारी दुनिया मुसलमान होकर अल्लाह पर ईमान ले आये ।''

12. सूरा 8 अल अनफाल-पारा-10 की आयत संख्या 65 :

'हे नबी तुम ईमान लाने वालों अर्थात मुसलमानों को लड़ाई के लिए उभारो अगर तुममें से २० आदमी धैर्यवान हैं तो दो सौ पर विजयी होंगे । अगर १०० आदमी ऐसे हैं तो इनकार करने वाले गैर-मुस्लिम बनने से इनकार करने वाले हजारों आदमियों पर भारी रहेंगे ।'' फिर आगे कहा गया है, अल्लाह को मालूम हुआ है कि तुम में कमजोरी है, इसलिए तुममें से सौ आदमी धैर्यवान है तो २०० पर और हजार ऐसे हो तो दो हजार पर अल्लाह के हुकम से विजयी होंगे ।

13. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 5 :

"जब हराम अर्थात वर्जित महीने बीत जाएं तो मुशरिकों बहुदेव-वादियों अर्थात

बहुत से देवों को मानने वाले गैर-मुस्लिमों का वध करों, जहां पाओ, उन्हें पकड़ो । घेरो और हर घात लगाकर उनकी खबर लेने के लिए बैठो, अगर वे तौबा कर लें अर्थात मुसलमान बन जाएं तो उन्हें छोड़ो ।

14. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 6 :

"मुशरिकों यानी बहुदेवों को मानने वालों गैर-मुस्लिमों के लिए अल्लाह व रसूल के नजदीक समझौता या संविदा कैसे हो सकता है जो अपनी कस्में तोड़ कर कुफ्र अधर्म को अपनाते हैं. तुग कुफ्र के ध्वजवाहकों से युद्ध करो, क्योंकि उनकी कस्मों का कोई विश्वास नहीं है । यह तलवारों के जोर से ही बाज आएंगें ।''

15. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 23 :

" हे लोगों जो ईमान लाये हो अर्थात जो मुसलमान बन गये हो अपने बापों और भाईयों को भी अपना साथी बनाओ अगर वे ईमान के मुकाबले में कुफ्र को प्राथमिकता दें ।

16. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 29 :

"युद्ध करो किताब वालों में से अर्थात कुरान पर ईमान लाने वालों में से उन लोगों के विरूद्ध, जो अपना मजहब नहीं बनाते उनसे लड़ो । यहां तक लड़ो कि वे अपने हाथ से रक्षा कर दें और छोटे बनकर रहें ।''

17. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 38 :

'हे लोगों, जो ईमान लाये हो अर्थात मुसलमान हो गये हो, मुशरिकों या बहुदेवों को मानने वाले गैर-मुस्लिम अपवित्रा हैं, अत: इस वर्ष के अन्त के पश्चात इन्हें प्रतिष्ठित मस्जिद काबा के पास न फटकने दें ।''

18. सूरा 9 अत तौबा-पारा-10 की आयत संख्या 36-37 :

वास्तविकता यह है कि महीनों की संख्या जब अल्लाह ने आकाश और धरती की रचना की है अल्लाह के लेख में बारह हैं और उनमें से चार महीने आदर के हैं, यही ठीक व्यवस्था है । अत: इन चार महीनों में अपने ऊपर अत्याचार न करो और मुशरिकों अर्थात बहुदेव मानने वाले गैर-मुसलमानों से मिलकर लड़ो, जिस प्रकार से वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह डर रखने वालों के ही साथ है । महीने को हटाना तो कुफ्र अधर्म है । सर्वाधिक एक अधर्मयुक्त कर्म है, जिससे ये काफिर लोग कुफ्र में ग्रस्त किये जाते हैं । किसी वर्ष एक महीने को वैध कर लेते हैं और किसी वर्ष उसको अवैध कर देते हैं ताकि अल्लाह के हराम किये हुये महीनों की संख्या भी पूरी कर दें और अल्लाह का अवैध ठहराया हुआ वैध भी कर लें । उनके बुरे कर्म उनके लिए शोभायमान कर दिये है और अल्लाह

सत्य के इनकार करने वालों को राह पर नहीं लगायेगा ।

कुरान के अनुवादक श्री फारुख खां ने अपने फुटनोट में इसके बारें में खुलासा इस प्रकार किया है : अरब में महीनों को हटाने की प्रथा दो प्रकार की थी । एक तो यह कि लड़ने-भिड़ने और लूट करने और खून का बदला लेने के लिए किसी हराम महीने को हलाल वैध ठहरा लेते थे और बदले में किसी हलाल महीने को हराम करके महीनों की संख्या पूरी कर लेते थे । दूसरे यह कि चंद्र वर्ष को सौर वर्ष के अनुरूप करने के लिए उसमें लौंद का एक महिना बढ़ा देते थे । ताकि हज्ज सदैव एक ही ऋतु में आता रहे और वे उन कष्टों से बच जाएं, जिसका सामना चन्द्रमा के हिसाब के अनुसार विभिन्न ऋतुओं में हज्ज गर्दिश करते रहने से करना पड़ता है । इस प्रकार 33 वर्ष तक हज्ज अपने वास्तविक समय के विपरीत दूसरी तिथियों में होता रहता था और 34वें वर्ष एक बार वास्तव में जिल हज्जा की नौ-दस तारीख को अदा होता था । नबी सल्ल ने जिस वर्ष हज्ज अदा किया है, उस वर्ष हज्ज अपनी वास्तविक तिथियों में आया था और उसी समय से महीने हटाने का तरीका वर्जित किया गया ।

19. सूरा 47 मुहम्मद-पारा 26 :

" आगे कहा गया है, अत: जब इन इनकार करने वालों अर्थात मुसलमान बनने से इनकार करने वालों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो तुम्हारा पहला काम गर्दनें मारना है । यहां तक कि जब तुम उनको अच्छी तरह कुचल दो, तब कैदियों को मजबूती से बांधो । इसके बाद तुम्हें अधिकार है एहसान करो या अर्थदण्ड यानी फिदया का मामला करो । यहां तक कि लड़ाई में अपने हथियार डाल दे, यह है तुम्हारे करने का काम ।''

20. सूरा 47 मुहम्मद पारा-26 की आयत 1 से 5 :

'जिन लोगों ने इनकार किया यानि मुसलमान नहीं बने और अल्लाह के रास्ते से रोका । अल्लाह ने उनके कर्मो को अकारथ कर दिया है और जो लोग ईमान लाये अर्थात मुसलमान बन गये और कुरान को मान लिया जो मुहम्मद पर अवतरित हुआ है, अल्लाह न उनकी बुराइयां दूर कर दी हैं ।

इन सब आयतों के अतिरिक्त कुरान के अधिकांश सूरों और आयतों में मुसलमान के अतिरिक्त सभी गैर-मुस्लिमों को काफिर बताया गया है और काफिरों को यातनाएं देने तथा उनसे युद्ध करके उन्हें समाप्त करने या मुसलमान बन जाने के लिए ही आदेश दिये गये हैं । इससे पाठकों को कुरान और उसके अल्ला तथा मुस्लिम सिद्धान्तों की जानकारी की झलक मिलेगी, आप इससे यह भी समझ जाएंगे कि अल्लाह ने कुरान में अधिकांश रूप में गैर-मुस्लिमों, यहूदी है या ईसाई है और

चाहे बहुदेव वादी है या हिन्दू तथा अन्य कोई गैर-मुस्लिम है, उन सभी को मार-मार कर या तो मुसलमान बनाओ या उनकी गर्दनें मारों अर्थात उन्हें कत्ल कर दो । इस प्रकार कुरान और अल्लाह दोनों ही सभी गैर-मुस्लिमों के प्रति नफरत और घृणा पैदा करते हैं और मारने तक का आदेश देते है तो ऐसी स्थिति में जो मजहब नफरत की नींव और घृणा की दीवार पर खड़ा हो, वह मजहब या उसके अनुयायी किसी दूसरे मजहब या जाति, सम्प्रदाय के साथ किस प्रकार प्रेम से रह सकते हैं क्योंकि उनका मजहब वालों अर्थात जो मुसलमान नहीं है, इनसे नफरत और उन्हें मार देने की बात ही सिखाता है जबकि शायर इकबाल ने इसके विपरीत यह लिखा है, **''मजहब नही सिखाता आपस में बैर करना'' और इकबाल साहेब का सम्बन्ध उसी मजहब से था, जो मजहब अन्य मजहबों से बैर करना ही सिखाता है, क्योंकि उनकी कुरान और अल्लाह का यही फरमान है, किसी गैर-मुस्लिम से मित्रता भी न करो और न उसे अपना साथी बनाओं । फिर इकबाल साहेब का यह शेर गलत सिद्ध हो जाता है । ऐसा लगता है कि इकबाल साहेब ने या तो कुरान पढ़ी नही थी या फिर वह लोगों को इस शेर के माध्यम से धोखा देते रहे थे ।**

मुस्लिम मजहब की पवित्र किताब कुरान और उसका अल्लाह, दोनों ही यहां तक कहते हैं कि काफिरों अर्थात गैर-मुस्लिमों को अपनी मस्जिद के पास तक मत फटकने दो । अगर तुम्हारे बाप और भाई भी इन काफिरों से मित्राता रखते है तो उनसे भी नफरत करो वरना तुम भी काफिर समझे जाओगे । इस्लाम की पवित्र किताब कुरान और उसके अल्लाह पर ईमान लाओ अर्थात मुसलमान बन जाओ । कुरान में सभी गैर-मुस्लिमों के लिए दो ही विकल्प बताए गए हैं या तो मुसलमान बन जाएं या कत्ल कर दिये जाएं । इन हालात में कोई भी मुसलमान किसी गैर-मुसलमान के साथ बराबरी के आधार पर किस तरह रह सकता है । इन्हीं कारणों से, जहां ये मुकाबला करने की स्थिति में होते हैं, वहां मार-काट, दंगा-फिसाद आरम्भ कर देते हैं क्योंकि उनकी कुरान में ऐसा करना उनके लिए सवाब का काम है, यदि ऐसा नही करेंगे तो उनकी गिनती भी काफिरों में होगी । इसी कारण हिन्दुस्थान तथा अन्य देशों के गैर-मुस्लिम जगत में जहां भी मुसलमान प्रतिरोध करने की स्थिति में होते हैं, वहीं कुरान और अल्लाह के आदेश का पालन करने के लिए मार-काट तथा दंगे-फिसाद आरम्भ कर देते हैं, इसीलिए **एक बार मुहम्मद अली ने कहा था कि मैं किसी भी गिरे-से-गिर मुसलमान को गांधी जी से अच्छा समझता हूं, क्योंकि वह मुसलमान है** । यह उनकी बात ठीक भी थी क्योंकि कुरान और अल्लाह यही आदेश देता है कि किसी भी गैर-मुस्लिम को न अपना साथी बनाओ और न ही मित्र । यदि तुमने ऐसा किया

तो तुम भी काफिर समझे जाओगे । इसी कारण मुहम्मद अली ने यह बात कही क्योंकि गांधी जी मुसलमान नहीं थे । इसी कारण पिछले दिनों फिलीपीन्स, सीरिया तथा लेबनान में मुसलमानों और ईसाइयों में दगें -फिसाद और मार काट हुई । इसलिए हिन्दू के अतिरिक्त अन्य किसी गैर मुस्लिम को यह नहीं समझना चाहिये कि मुसलमान केवल हिन्दू का ही शत्रु है और हिन्दू को काफिर मानता है अपितु इस्लाम मजहब की कुरान और अल्लाह के अनुसार ऐसा नहीं है, उन सभी के लिए एक जैसा मारने या मुसलमान बनाने का आदेश दिया गया है। यह बात समस्त गैर-मुस्लिम जगत को भली-भांति समझनी होगी।

इतना होते हुए भी यदि हमारे देश के नेता या अन्य कोई महानुभाव तथा समस्त गैर-मुस्लिम जगत का कोई भी महानुभाव हिन्दू -मुस्लिम भाई-भाई का नारा लगाते हैं तो वे अपने आपको उस कबूतर की भांति धोखा दे रहे हैं, जो बिल्ली को अपनी ओर आते देखकर यह समझकर अपनी आँखें बन्द कर लेता है कि अब बिल्ली उसे नहीं देख पाएगी और वह बच जाएगा। किन्तु वह ऐसा करके अपनी गर्दन ही तुड़वाता है क्योंकि बिल्ली तो उसे देख रही है और वह इसकी गर्दन तोड़ ही ले जाएगी। इससे अच्छा हो कि वह अपना बचाव करे। यही स्थिति उन लोगों की है, जो इस्लाम के अनुयायी लोगों को अपना भाई या मित्र समझते हैं। यह बात कुरान से स्पष्ट हो जाती हैं। गांधी जी का यह कहना 'ईश्वर अल्लाह तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान' भी गलत सिद्ध हो जाता है क्योंकि अल्लाह तो कुरान के अनुसार केवल मुसलमानों का है और जिस ईश्वर की बात गांधी जी ने कही है वह समस्त सृष्टि और मानव-जाति की रचना करने वाला है। गांधी जी का ईश्वर तो समस्त जगत का पालनकर्ता है किन्तु अल्लाह तो केवल मुस्लमानों का ही पालनकर्ता हैं। इस कारण ईश्वर के साथ अल्लाह का नाम जोड़ना गलत है। गांधी जी का ईश्वर न किसी को मारने का आदेश देता है न किसी को काफिर समझता है। उसने तो केवल इन्सान पैदा किया है और उसे मजहब में नहीं बांटा। जातियों में तो मानव को मानव ने ही बांटा है ।

इसलिए क्या ही अच्छा होता कि उस समय जब हमारे देश का बंटवारा हुआ था उससे पहले गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती और समझा होता तो वह हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई' का नारा नहीं लगाते और न ही इस देश के बंटवारे को स्वीकृति देते क्योंकि वह तो अहिंसा के पुजारी थे और कुरान में हर जगह हिंसा करने का आदेश दिया गया है। किन्तु यह दुर्भाग्य ही रहा कि गांधी जी ने मुस्लिम इतिहास और उनकी मजहबी पुस्तक कुरान को न पढ़ा और न समझा । इस्लाम की तो राजनीति मजहब के आधार पर है न कि राजनीतिक पंथ निरपेक्ष है जैसाकि हमारी सरकार ने बना

रखी है । यदि अब हमारे नेता जो गांधी जी के ही अनुयायी हैं और जो सत्ता में हैं या विरोधी राजनीतिक पक्ष ने अब भी इस्लाम को नहीं समझा तो वह दिन दूर नहीं है जब इस देश हिन्दुस्थान का एक बार पुन: बंटवारा होने की स्थिति पैदा हो जाएगी और देखते-देखते पहले की भांति इसके पुन: टुकड़े हो जाएंगे । ऐसी स्थिति में इतिहास इन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा ।

अत: मेरे देश के सभी जिम्मेदार नेताओं, बुद्धिजीवियों तथा विशेषकर प्रधानमंत्री से अनुरोध है कि ये सभी लोग एक बार कुरान को भली-भांति अवश्य ही पढ़ें और उसे समझें ताकि उन्हें मुस्लिम सिद्धान्तों की पूरी जानकारी हो सके जिनके पीछे सभी वोटों के लिए इस देश का पुन: बंटवारा करने की भूमिका का निर्माण कर रहे हैं । उन्हें यह पता लग जाएगा कि इस्लाम मजहब की तो आधारिशला ही गैर-मुस्लिमों और अन्य सभी से मुसलमानों के अतिरिक्त नफरत करने पर ही आधारित है । ऐसी स्थिति में इस्लाम के अनुयायी लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे सबके साथ मिलकर रहेंगे एक भयंकर भूल होगी और इस भूल के परिणाम बड़े ही भयंकर होंगे ।

यहां एक बात का उल्लेख करना मैं उचित ही समझता हूँ कि दुर्भाग्य से हमारे देश के बहुत से नेता, विद्वान तथा लेखक मुस्लिम, ईसाई, सिख तथा जैन आदि मजहबों या सम्प्रदायों को धर्म का नाम देकर सम्बोधन करते हैं । जबकि समस्त विश्व में धर्म मात्र एक हिन्दू ही है शेष सभी मत सम्प्रदाय या मजहब ही हैं । धर्म के दस लक्षण होते हैं, जो समाज इन दस लक्षणों का पूरी तरह परिपालन करता हैं वही समाज धर्म कहलाता है । इसके अतिरिक्त धर्म एक विस्तृत समाज का रूप है और एक पद्धति हैं, जो समाज इसे अपनाते हैं 'वही धर्म कहला सकते हैं ।' इन दस लक्षणों का मात्र हिन्दू समाज ने ही पूरी तरह परिपालन किया है और अपनी जीवन पद्धति में शामिल किया है । क्योंकि किसी भी जाति या सम्प्रदाय अथवा मजहब का महापुरूष उसकी पवित्र-पुस्तक और पूजाविधि एक ही होती है और धर्म में विभिन्न महापुरूष तथा विभिन्न पवित्र-पुस्तकें होती हैं किन्तु उनका धर्म सबका एक ही जैसे हिन्दू धर्म । समस्त विश्व के लोग हिन्दू के अतिरिक्त किसी-न-किसी जाति, पंथ या मजहब में बंटे हुए हैं इसी कारण संसार में उथल-पुथल हो रही है । इसी कारण जब एक मजहब दूसरे मजहब पर हावी हो जाता है तो उससे फिर कोई शैतान इसी मजहब के टुकड़े कर एक नया फिरका बना देता है और मानव फिर हिंसक पशु का रूप धारण कर आपस में ही मार-काट आरम्भ कर देता है । इसका प्रमाण मुसलमानों में ही शिया-सुन्नी तथा अहमदी और मौहम्मदी तथा ईरान और ईराक का युद्ध हमारे सामने है । लेख काफी लम्बा हो गया है इसके लिए क्षमा करेंगे । यह सब लिखना आवश्यक था इसी कारण ऐसा हुआ है ।

पुस्तक के सम्बन्ध में
न्यायालय का निर्णय

(प्रस्तुत पुस्तक पर हमारी सरकार ने सन् 1987 में प्रतिबन्ध लगा दिया था किन्तु विद्वान न्यायाधीश श्री सी० के० चतुर्वेदी ने 10 जनवरी 1989 को प्रतिबन्ध हटाने का आदेश दिया।)

विद्वान ए० पा० पी० तथा अभियुक्त के अधिवक्ता की दलीलों को मैंने ध्यानपूर्वक सुना है । तथाकथित दोषी श्री बिशनस्वरूप ने भी स्वयं अपने मामले पर बहस की । इस्लामिक इंस्टीटयूट द्वारा प्रकाशित कुरान के हिन्दी संस्करण की वह प्रति भी उन्होंने मुझे दिखाई जिसमें से उन्होंने उनके अनुच्छेद यथावत हिन्दी में लिये थे । लेखक ने अपने तर्क में यह भी कहा कि अपनी रचना 'काश ! गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो ।' के लिए उसने जिस संस्करण को आधार रूप में ग्रहण किया है वह खुलेआम बाजार में वितरण के लिए उपलब्ध है, अत: उसका पुन: प्रकाशन कोई अपराध नहीं माना जा सकता है ।

मैंने पन्द्रह पृष्ठों की इस विवेच्य कृति को पढ़ा है जिसके अन्तिम आवरण पर लेखक ने अनुरोध किया है कि इस रचना को पढ़ने से ज्ञान-वर्धन होगा तथा हिन्दू धर्म के प्रति आस्था बढ़ेगी । सर्वसामान्य के प्रति लेखक द्वारा किया गया यह अनुरोध इस रचना में निहित उदेदश्य को व्यक्त करने के कारण महत्वपूर्ण है ।

जिस विवेच्य रचना को लेकर न्यायालय में मुकदमा दायर किया गया है, उसे मैंने पढ़ा है । मुकदमें में यह कहीं नहीं कहा गया कि रचना में दिए गए ऐतिहासिक तथ्य एवं उद्वरण गलत हैं । लेखक ने गांधी जी, जवाहरलाल नेहरू और जिन्ना जैसे राष्ट्रीय नेताओं की आलोचना करते हुए उन पर धार्मिक और साम्प्रदायिक आधार पर भारत का विभाजन किए जाने का आरोप लगाया है । उसने इस बात पर बल दिया है कि विभाजन से पूर्व ब्रिटिश सता ने धर्म की आड़ में भारतीय समाज को बांट दिया था और बाद में अखण्ड भारत को दो पृथक राज्यों में विभक्त कर दिया । वास्तव में लेखक ने अपने ढ़ंग से सोचकर यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि गांधी जी ने कुरान के हिन्दी संस्करण को लेखक की भांति पढ़ा होता तो वे कदापि एकता का नारा बुलन्द न करते । इस्लाम में गहरी आस्था और अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा से कोई सामान्य व्यक्ति बिना किसी निरादर की भावना के कुरान की आयतों का जो अभिप्राय ग्रहण करेगा, ऐसे प्रमाणित करने के लिए लेखक ने कुछ आयतें भी उद्धत की हैं ।

रचना को ध्यानपूर्वक पढ़ने से यह स्पष्ट है कि लेखक को इस बात पर रोष है कि ईश्वर मानव-मानव में भेद कैसे कर सकता है ? **इस सम्बन्ध में लेखक ने कुरान के हिन्दी संस्करण को पढ़कर निष्पक्ष रूप में बलपूर्वक अपने तर्क प्रस्तुत किए हैं।**

सम्पूर्ण सामग्री को पढ़ने के पश्चात मेरे विचार से यह धर्म पर आधारित न होकर एक राजनीतिक रचना है । लेखक ने भारतीय संविधान द्वारा प्रदत अभिव्यक्ति और धार्मिक भावना की स्वतन्त्रता के मूल अधिकारों का अतिक्रमण न करते हुए संयमित भाषा में अपने विचारों और मान्यताओं को व्यक्त किया है । बाजार में उपलब्ध कुरान के हिन्दी संस्करण पर आधारित इस रचना को प्रस्तुत करने में मुझे कोई विशेष अपराध दिखाई नहीं देता ।

यह सम्भव है कि लेखक को मूल इस्लाम मजहब के सिद्धान्तों का ज्ञान न हो, या प्राचीन इस्लाम मजहब में उसकी गहरी आस्था न हो, किन्तु इसे जानने में तो उसकी रूचि हो सकती है । परन्तु उस पर हिन्दी भाषा में उपलब्ध सभी सामग्री को सतही ढंग से पढ़ने और उसके आधार पर अपने विचार व्यक्त करने का आरोप नहीं लगाया जा सकता । यह सम्भव है कि लेखक द्वारा उद्धृत हिन्दी संस्करण की आयतों की मूल और यथार्थ भावना नितान्त भिन्न हो, किन्तु एक सामान्य पाठक द्वारा हिन्दी में ग्रहण किए गए शाब्दिक अभिप्राय के लिए हिन्दी अनुवाद अपेक्षाकृत अधिक उतरदायी है । ए० पी० पी० ने भी यह स्वीकार किया है कि लेखक को अभिव्यक्ति और भाषण की स्वतन्त्रता है । अतः किसी एक व्यक्ति की विचाराभिव्यक्ति से दूसरे की असहमति विशेष महत्व नहीं रखती ।

मेरे विचार से यह रचना किसी भी दृष्टि से धार्मिक दुर्भावना को बढ़ावा नहीं देती। लेखक ने इस कृति में भारत के विभाजन पर एक विशिष्ट दृष्टि से विचार किया है । चाहे उसके विचार कितने ही तर्कहीन, व्यर्थ एवं अल्प ज्ञान पर आधारित क्यों न हों किन्तु उक्त स्थिति में अभियुक्त को निर्दोष घोषित किया जाता है । सम्बद्ध फाइल को अभिलेखागार में रख दिया जाए।

उपर्युक्त फैसला न्यायविद श्री सी० के० चतुर्वेदी जी ने 10 जनवरी 1989 को श्री बिशनस्वरूप की पुस्तक **(काश ! गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो)** पर किए गए मुकदमें को निरस्त कर दिया जो कि दो वर्ष पूर्व कांग्रेस सत्ता ने इस पुस्तक पर चलाया था । 29 जनवरी 1989 को यह फैसला श्री बिशनस्वरूप को कोर्ट से प्राप्त हुआ ।

नियम

1. साधारण डाकव्यय प्रत्येक पुस्तक के मूल्य में शामिल है ।
2. रजिस्टर्ड डाक के लिए सात रूपये पुस्तक के मूल्य में जोड़िए ।
3. वी. पी. मंगवाना बारह रूपये अधिक मंहगा पड़ता है । अधिक मूल्य की पुस्तक मंगवाने पर ही वी. पी. का आदेश दें ।
4. छोटा आर्डर होने पर पुस्तकों का मूल्य मनीआर्डर से भेजें ।
5. आर्डर बड़ा होने पर दिल्ली अथवा नई दिल्ली के किसी बैंक पर डिमाण्ड ड्राफ्ट भेजें ।
6. दिल्ली से बाहर के बैंकों पर लिखा गया चैक तभी स्वीकार किया जाएगा जबकि उसमें चैक उगाहने के पन्द्रह रूपए अधिक जोड़े गये हो ।
7. पुस्तक-विक्रेता व्यापारिक छूट के विषय में पहिले पूछ लें।
8. चैक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट **'विकल्प प्रकाशन'** दिल्ली के नाम से भेजें ।
9. साधारण तथा छोटे मूल्य की पुस्तकें मंगाने के लिये आप डाक टिकट द्वारा राशि भेज सकते है ।
10. तीस रूपये मूल्य से अधिक की पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाने के लिए कम से कम दस रूपये की डाक टिकट आर्डर के साथ अवश्य भेजें ।
11. दो सौ रूपये या उससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने पर २५ प्रतिशत छूट दी जायेगी व सादी डाक से डाक खर्च भी कार्यालय वहन करेगा ।

पुस्तकें बेचना विकल्प प्रकाशन का व्यवसाय नहीं है ।

विकल्प प्रकाशन का साहित्य प्राप्त करने के नियम

पांच सो रूपये या इससे अधिक पुस्तकें मंगानें पर 35 प्रतिशत की छूट। एक हजार या इससे अधिक मंगाने पर 40 प्रतिशत की छूट होगी। दो हजार या इससे अधिक मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट होगी। दो सौ रूपये की पुस्तक मंगाने पर डाकखर्च कार्यालय का होगा जो सादी डाक द्वारा भेजी जाएगी-रजिस्ट्री से मंगाने पर 10 रूपये अधिक भेजने होंगे।

विकल्प प्रकाशन की चर्चित पुस्तकें

1.	कच्चा चिट्ठा	डा0 रामप्रसाद मिश्र	40/-
2.	हिन्दू मात्र शब्द नहीं, प्रतीक है	" "	20/-
3.	Hindu Dharm : Faith of Freedom and way of life	" "	100/-
4.	.....शत्रुता (हिन्दू समाज के विरूद्ध.....)	" "	5/-
5.	हिन्दू राज्य	श्री बलराज मधोक	40/-
6.	विश्वव्यापी मुस्लिम समस्या और उसका समाधान	" "	20/-
7.	चरैवेती चरैवेती (बढ़े-चलो बढ़े चलो)	श्री ब्रह्मदत्त वातस्नायन	60/-
8.	काश ! धारा 370 लागू न होती	श्री जगमोहन	6/-
9.	विकल्प (समस्याएं अनेक : विकल्प एक)	श्री बिशन स्वरूप गोयल	40/-
10.	चेतावनी	" "	20/-
11.	क्या हमनें कभी सोचा है?	" "	20/-
12.	काश ! गांधीजी ने कुरान पढ़ी होती	" "	5/-
13.	आने वाले सन् 2000 से पूर्व मुस्लिम व ईसाई सम्प्रदाय लुप्त हो जायेंगे?	" "	20/-
14.	विकल्प के तीन लेख	" "	6/-
15.	भारतीय जनसंघ का उत्थान और पतन व ओ0जे0पी0 का भविष्य	" "	20/-
16.	अनमोल	" "	10/-

विकल्प प्रकाशन

3314, बैंक स्ट्रीट, करोल बाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाष : 5723231

कुरान में ऐसा क्या है जानने के लिये

काश गांधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो --

पाकिस्तान न बनता

मूल्य : 5/- रूपये

(100 पुस्तके एक साथ मंगाने पर 350/- रूपये अग्रिम भेजें)

व स्वयं छपवा कर वितरित व क्रयकर सकते हैं

विकल्प पुस्तक से 3 लेख मूल्य 6/- रूपये

पहला लेख : आजादी या बटवारा

देश आजाद नहीं हुआ है हिन्दू व मुस्लमान में बाटा गया है।

दूसरा लेख : मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना।

डा0 इकबाल का तराना मज़हब नहीं सिखता आपस में बैर करना - एक राजनैतिक सफेद झूठ।

तीसरा लेख : हिन्दू समाज ही परिवार नियोजन क्यों अपनाये। सत्ता की हिन्दू समाज को बहुमत से अल्पमत में करने की एक साजिश व हिन्दू बुद्धिजीवी का सर्वनाश।

एक साथ सौ पुस्तक मंगाने पर 500/- रूपये ।

काश धारा 370 न हो तो

नेहरु का शेख अब्दुल्ला को उपहार जो आज देश के लिये सरदर्द बना है। श्यामा प्रसाद मुखर्जी की हत्या का कारण व भारत में ही एक छोटा पाकिस्तान। कश्मीर समस्या और विशलेषण पुस्तक से एक अध्याय जो श्री जगमोहन, पूर्व राज्यपाल जम्मू-कश्मीर द्वारा लिखित।

मूल्य 6 रूपये